RNI NO. : MPHIN33094

अप्रैल से जून 2025

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 17 वां

अंक : 68 वां

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

जिनदेशना का एक और मंगल अभियान

श्रेष्ठी श्री बिमल कुमारजी (नीरु केमिकल्स) दिल्ली की चतुर्थ पुण्य स्मृति में

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान के अनेक नगरों में

एक साथ आयोजित

तृतीय जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर

मंगलवार, 13 मई से रविवार, 18 मई 2025 तक

सहयोगी संस्थायें :

- श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई
- श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुंबई
- श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर, इंदौर
- श्री हिम्मतलाल शाह हस्ते भूपेन्द्र भाई शाह, मुम्बई
- श्रीमति कुसुम बिमलजी, श्री रजनीशजी–श्री नीरज जैन परिवार, नीरु केमिकल्स, दिल्ली
- सिद्धार्थ – श्रेणिक सुपुत्र श्री विनयजी लुहाड़िया, वर्ली, मुम्बई
- श्रीमती अचरजदेवी जैन, धर्मपत्नि स्व. श्री निहालचंदजी जैन, पीतल फैक्ट्री, जयपुर
- श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन
- श्रीमती जवेरबेन मणिभाई कारिया, मुम्बई
- मुक्ति मंडल संघ, मुंबई हस्ते डॉ. बासंती बेन शाह
- श्रीमति आशा नरेश लुहाड़िया, दिल्ली

निर्देशक
विराग शास्त्री
जबलपुर, 9300642434

सह–निर्देशक
पंडित आशीष शास्त्री
टीकमगढ़

संयोजक : पं. भूपेन्द्र शास्त्री, विदिशा | पं. अमित अरिहंत, भोपाल | पं. श्रेयांस शास्त्री, अभाना | पं. अनिकेत शास्त्री, भिंड

आध्यात्मिक, तात्विक,
धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन – डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका
- श्रीमति कोमल–नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली
- श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/ श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1	सूची	1
2	प्यारी कवितायें	2
3	संपादकीय	3
4	हमारा गौरवशाली इतिहास	4
5	बात इतिहास की	5
6	बेटी का निर्णय	6-7
7	भोगभूमि का मतलब	8-9
8	अंधे बैल की आंख बन गय किसान	9
9	पदम पुरस्कार पाने वाली जैन महिलायें	10-11
10	अब नहीं लाऊँगी	12-13
11	क्या प्यार करना अपराध है ?	14-15
12	अचौर्यव्रती	16-17
13	कोका–कोला, पैप्सी जैसे	18
14	बर्फ के गोला न बाबा न....	19
15	कुछ हट के : ऐसे भी लोग	20
16	भारत में रेलवे लाने वाला जैन	21-22
17	24 तीर्थंकर एक ही पेंटिंग में	23
18	संतोषी सदा सुखी	24-25
19	जिनदेव ही एक शरण	26
20	हमारे नये प्रकाशन	27
21	समाचार	28
22	दिगागी कसरत	29
23	श्री नरेन्द्र जैन बने परम शिरोमणि संरक्षक	30
24	जन्मदिन की शुभकामनायें	31
25	बोलते चित्र	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर
सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700
PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं ।

प्यारी कवितायें -

बर्फ के गोले

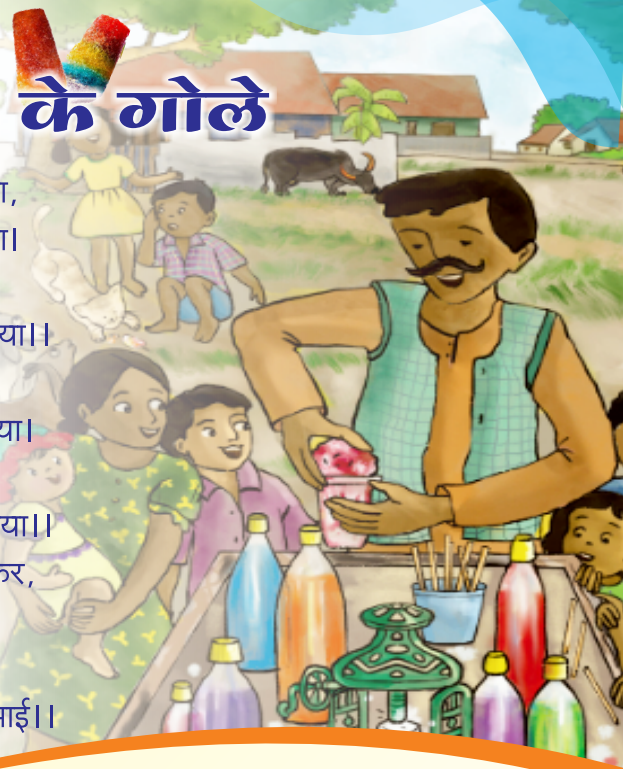

बर्फ के गोले के खा लो भैया,
गोले वाला आया।
रंग बिरंगे गोले खाने,
मन मेरा ललचाया।।
बिना छने पानी का बनता,
मम्मी ने समझाया।
अनंत जीवों की हिंसा होती,
प्रभुवर ने बतलाया।।
घर की बनी आईसक्रीम लेकर,
मेरी दीदी आई।
कभी न खाऊँ बर्फ के गोले,
बात समझ में आई।।

छुट्टी

लो गर्मी की छुट्टी आई,
छोड़ो पुस्तक और पढ़ाई।
सुनकर नानी झट मुस्काई,
दी सीख जो समझ में आई।
खेलो कूदो खाओ मिठाई,
जैन धर्म की करो पढ़ाई।
बाल शिविर में जाना है,
सम्यक् ज्ञान का पाना है।
बात समझ में सबको आई,
लो गरमी की छुट्टी आई।।

संपादकीय

निर्भय पाप की ओर बढ़ता समाज
सोचनीय और विचारणीय

समाज में घट रही घटनाओं ने एक बार फिर अपने जीवन के बारे में सोचने पर विवश कर दिया है। मेरठ की मुस्कान रस्तोगी द्वारा अपने ही पति की बेरहमी से हत्या 35 टुकड़े करके सीमेंट के ड्रम में डालना, गोवा में एक कंपनी की बड़ी अधिकारी द्वारा अपनी बेटी की हत्या करना, बेंगलुरु, दिल्ली और गुड़गांव जैसे बड़े शहरों में पढ़े-लिखे परिवारों में पत्नी से परेशान होकर पति द्वारा आत्महत्या करना, पिता द्वारा बच्चों की हत्या करना, मां के द्वारा बेटी को तालाब में फेंक देना, मोबाइल के ज्यादा प्रयोग पर मां द्वारा टोकने पर मिलने पर एमबीबीएस छात्रा द्वारा आत्महत्या, एक कॉमेडियन द्वारा निम्न स्तर की कॉमेडी करना और उस पर भी युवा वर्ग द्वारा ठहाके लगाना जैसी घटनाएं आत्मा को झकझोर रही हैं। इन सारी घटनाओं के अपराधियों में अनपढ़ लोगों से लेकर बड़ी-बड़ी कंपनियों के सीईओ भी शामिल हैं। भारत जैसे संस्कार प्रधान देश में इस तरह की घटनाएं बहुत चिंताजनक है। 20-20 साल तक साथ रहने वाले पति-पत्नी एक क्षण में ही अलग हो जाते हैं। आखिर यह सब क्यों हो रहा है और यह संकट जैन समाज को भी स्पर्श कर रहा है। इसका एकमात्र कारण है कि हमारी शरीर और भौतिक सुखों की चाह असीमित हो गई है। हम शरीर, संपत्ति, यश के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तैयार हैं और क्षणिक आवेश में किए गए कार्य जीवन भर दुःख का कारण बन रहे हैं और उनका पूरा जीवन जेल में अथवा दुखों में बीतने वाला है। जब तक हमारा स्वाध्याय नहीं होगा, कर्म उदय - कर्म सिद्धांत का विश्वास नहीं होगा और पूर्व भव आगामी भव का निर्णय नहीं होगा - तब तक ऐसे निर्भय पाप होते ही रहेंगे। जिस दिन हमें इन सबका निर्णय हो जाएगा उसे दिन हम छोटा पाप करने के पहले भी सौ बार सोचेंगे। इच्छाओं का बढ़ना और इच्छाओं की पूर्ति के लिए कोई भी अनैतिक कार्य करना आज सामान्य बात हो गई है और यही कुटिलता हमारे बच्चे भी सीख रहे हैं। कोई आश्चर्य नहीं है कि धन - संपत्ति -भोग के लालच में बच्चे हमारे साथ भी कोई ऐसी घटना न कर बैठें जिसके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं इसलिए हमें दृढ़तापूर्वक जिन धर्म के वास्तविक संस्कारों को अपने परिवार और समाज तक पहुंचाना होंगे। इसके लिए मात्र विद्वान ही नहीं बल्कि परिवार के प्रत्येक सदस्य को संकल्पित होना होगा वरना हमें भी कोई ऐसी अवांछित घटना के लिए तैयारी कर लेना चाहिए।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

हमारा
गौरवशाली इतिहास

इस चित्र में एक जैन तीर्थंकर की मूर्ति दिखाई दे रही है जिसे तमिलनाडु के अझियान बांध के पास एक हिंदू देवी अठाली अम्मन में परिवर्तित कर दिया गया है। माना जाता है कि यह मूर्ति 7वीं शताब्दी की है। यह मूलतः जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा है। बाद में इसे हिंदू देवी के रूप में बदल दिया गया। इसके पीछे त्रिशूल रख दिये गये। जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को कमल की मुद्रा में पद्मासन या खड्गासन मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। भले ही यह मंदिर आज हिन्दु समाज के अधिकार में है परन्तु इन प्रतिमाओं से यह सिद्ध होता है कि पूरे देश में एक समय में एक मात्र जैन धर्म ही विद्यमान था।

फटे महादेव का मंदिर

यह बनारस के फटेश्वर महादेव मंदिर में स्थित शिवलिंग है। एक ऐतिहासिक कथा के अनुसार प्रसिद्ध जैनाचार्य समन्तभद्र स्वामी को भस्मक व्याधि नाम की बीमारी हो गई। जिससे उन्हें बहुत भूख लगती थी, आहार से उनका पेट नहीं भरता था। बीमारी ठीक होने तक उन्होंने दिगम्बर मुद्रा छोड़ दी और शिव मंदिर में पुजारी बन गये। वहाँ शिव के लिये आने वाले भोग को दरवाजा बंद करके खाने लगे जिससे उनका पेट भरने लगा। बाद में पकड़े जाने पर उन्होंने वहीं पर स्वंयभू स्तोत्र की रचना की और उसका पाठ करने लगे। जैसे ही उन्होंने चन्द्रप्रभ भगवान की भक्ति पढ़नी प्रारंभ की और स्तोत्र पाठ किया त्यों ही शिवलिंग के बीच से भगवान चन्द्रप्रभ की स्फटिक मणि की प्रतिमा प्रगट हुई।

फिर यह प्रतिमा बनारस से फिरोजाबाद के पास यमुना नदी के तट पर बसे चंद्रबाड़ा के राजा चंद्रपाल के पास आई। जब मुस्लिम शासक मुहम्मद गौरी ने चंद्रबाड़ा पर आक्रमण किया तो प्रतिमा की सुरक्षा की दृष्टि से यह प्रतिमा यमुना नदी में प्रवाहित कर दी। यदि प्रतिमा मंदिर में होती तो मुहम्मद गौरी प्रतिमा को नष्ट कर देता। बाद में एक जिनधर्म के भक्त को यह प्रतिमा स्वप्न में दिखाई दी तो उसने स्वप्न के अनुसार कुछ फूल यमुना नदी में फेंके तो सारे फूल एक जगह एकत्रित हो गये। उसी स्थान पर गहराई में खोज करने पर यह प्रतिमा प्राप्त हुई और तबसे आज तक यह भव्य प्रतिमा फिरोजाबाद के जिनमंदिर में विराजमान है।

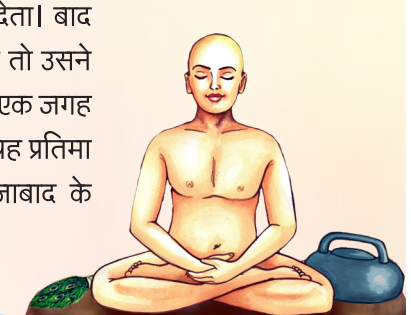

बेटी का निर्णय

नहीं पापा, मैं उससे शादी नहीं कर सकती... ।

आकाश में कमी क्या है बेटा। अच्छी जॉब है, बढ़िया पैकेज है, देखने में सुंदर लगता है, प्रतिष्ठित परिवार है, समाज में नाम है और क्या चाहिए ?

पापा, यह आप कह रहे हैं . . . . आप तो कहते थे कि जीवन में धर्म का मूल्य है, धन का नहीं और आप आज ही धन की महिमा गा रहे हैं।

वह सब ठीक है बेटा। लेकिन आज के दौर में पैसा बहुत जरूरी है, पैसा नहीं तो जीवन में सुख नहीं मिल सकता।

वाह पापा, बचपन से आज तक मुझे अपने सिखाया कि धर्म नहीं तो सुख नहीं। सुख धर्म से मिलता है और आज आप ही कह रहे हैं कि सुख धन से आता है धर्म से नहीं।

बेटा, मेरा कहने का मतलब वह नहीं है। लेकिन संसार में रहने के लिए तो धन तो चाहिए ना .... ।

लेकिन पापा, जिस घर में रात्रि भोजन होता हो, जमीकंद का सेवन होता हो, जिन मंदिर जाने का कोई नियम नहीं हो पर घर-घर है क्या ? उसे जैनी कहना भी मेरे लिए शर्म की बात है।

देख लो बेटा। हर पिता यह चाहता है कि उसकी बेटी सुख में रहे और निर्णय तुम्हें ही करना है मुझे नहीं।

पापा, दुनिया में हर पिता अपनी बेटी को सुख देना चाहता है मुझे लगता है आपने मुझे जीवन भर दुःख देने का निर्णय कर लिया है। धन तो बहुतों के पास होता है नेताओं के पास भी, अभिनेताओं के पास और नाचने वालों के पास भी लेकिन उनका जीवन भोग में ही बीत जाता है और उनका मरण भी आकुलता में होता है। मुझे तो ऐसा पति चाहिए जिसके पास भले ही धन कम हो लेकिन उसे जिन धर्म की रुचि हो जो कम से कम जैनी के सामान्य गुणों का पालन करता हो। क्या आप यह चाहते हैं कि मैं आकाश से शादी करके कुदेवों को नमस्कार करूं ?

लेकिन बेटा, इन सब बातों से जीवन नहीं चलता जीवन तो सुविधाओं से चलता है और तुझे दुख होगा तो हमें भी दुख होगा ।

तो पापा, आपने मुझे बचपन से ही मैना सुंदरी, सीता बंधुश्री की कहानियाँ क्यों सुनाई ? मैंने तो उसी समय निर्णय कर लिया था कि मैं भले ही जीवन भर विवाह नहीं करूंगी लेकिन विवाह करूंगी तो उसके साथ ही जो जैनी तो हो लेकिन सिर्फ नाम का नहीं, काम का भी। जिन मंदिर जाता हो जिन धर्म की रुचि हो, स्वाध्याय करता हो, जिसे जिनधर्म से प्रेम नहीं वह मुझसे क्या प्रेम करेगा ?

वाह बेटा, तुम्हारे विचार सुनकर मैं भी धन्य हो गया। मैं तो मात्र तुम्हारे मन को जान रहा था कि आखिर तुम्हारी दृढ़ता कितनी है लेकिन मुझे गौरव है मेरे कुल में, मेरे परिवार में तुम जैसी बेटी हुई।

यह सुनकर बेटी ने मुस्कराते हुये पापा के कंधे पर सर रख लिया और पिता की आंखों से आज खुशी के आंसू निकल रहे थे।

- विराग शास्त्री

भोगभूमि का मतलब

प्रत्येक काल चक्र में छःकाल होते हैं। इसमें प्रथम काल को सुखमा-सुखमा, द्वितीय काल को सुखमा, तृतीय काल को सुखमा-दुखमा, चतुर्थ काल को दुखमा-सुखमा, पंचम काल को दुखमा और छङ्गवें काल को दुखमा- दुखमा कहा जाता है। इसमें क्रमशः सुख कम होता जाता है और छठवें काल में दुख ही दुख होता है। इसे अवसर्पिणी काल कहा जाता है। फिर क्रमशः उल्टे क्रम में दुखमा-दुखमा, दुखमा, दुखमा-सुखमा, सुखमा - दुखमा, सुखमा, सुखमा-सुखमा कहा जाता है। इस उत्सर्पिणी काल कहा जाता है। इस पूरे समय को एक काल चक्र कहा जाता है। यह एक काल चक्र 20 कोड़ा-कोड़ा सागर का होता है। इसमें से प्रथम तीन कालों को भोग भूमि कहा जाता है इसके बाद चतुर्थ काल से कर्मभूमि नाम से जाना जाता है।

भोगभूमि की विशेषतायें -

1. भोगभूमियों के जीवों की सभी आवश्यकताओं दस प्रकार के कल्पवृक्षों से होती है।
2. पुरुष और स्त्री युगलिया अर्थात् जुड़वां के रूप में जन्म लेते हैं।
3. भोग भूमि के जीवों का गर्भ से जन्म होता है।
4. माता-पिता अपनी संतान का चेहरा देखने के पहले ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं।
5. भोगभूमि के जीवों की छींक या जंभाई आते ही मृत्यु हो जाती है। मरण होते ही शरीर कपूर की भांति उड़ जाता है।
6. भोगभूमियों के जीवों का कुटुम्ब या परिवार नहीं होता।
7. भोगभूमि के जीवों में कुल, जाति, स्वामी, सेवक का भेद नहीं होता और परस्पर बैर-विरोध नहीं होता।
8. भोगभूमि के सभी जीव वज्रवृषभनाराच संहनन वाले और समचतुरस्र संस्थान वाले होते हैं। भोगभूमि के जीव मुकुट, माला, कुण्डल, कमरबंद, रत्नमयी आभूषण पहनते हैं।
9. भोगभूमि में जिनमंदिर नहीं होते।
10. भोगभूमि के मनुष्यों के साथ सिंह आदि जीव भी शाकाहारी होते हैं।
11. भोगभूमि के जीवों को रोग, भय,चिंता, शारीरिक कष्ट नहीं होते।

12. भोगभूमि के जीव मायाचारी रहित होते हैं, परस्पर प्रेम करते हैं, सूर्य के समान तेजस्वी होते हैं, 64 कलाओं में निपुण होते हैं।
13. प्रत्येक भोगभूमि के मनुष्य में 9000 हाथियों के समान बल होता है।
14. भोगभूमि के मिथ्यादृष्टि जीव मृत्यु के बाद भवनवासी देवों में और सम्यग्दृष्टि जीव सौधर्म-ईशान स्वर्ग में जन्म लेते हैं।
15. भोगभूमि के जीव जातिस्मरण से, देवों के उपदेश से, ऋद्धिधारी मुनिराजों के उपदेश से सम्यक्त्व ग्रहण कर सकते हैं।
16. भोगभूमि के काल में द्विइन्द्रिय से चार इन्द्रिय आदि जीव नहीं होते।
17. भोगभूमि के काल में दिन-रात का भेद नहीं होता। गर्मी- सर्दी न होकर सदा एकसा वातावरण रहता है।
18. भोगभूमि के जीवों को मल-मूत्रादि नहीं होते।

अंधे बैल की आंख बन गया किसान

आज के क्रूर जमाने में पशु पालने वाले लोग जब तक पशु से काम हो तब तक भोजन देते हैं जब पशु कोई काम का नहीं होता तो उसे आवारा छोड़ देते हैं या फिर कत्लखाने भेज देते हैं परन्तु महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के वलूज गांव के किसान इंद्रसेन मोटे ने अपने बैल का पुत्र की तरह साथ दे रहे हैं। इनके बैल का नाम सोन्या है। 12 साल पहले कैंसर के कारण सोन्या की दोनों आंखें खराब हो गईं। इंद्रसेन ने सोन्या पर हजारों रुपये खर्च करके इलाज कराया पर कोई लाभ नहीं हुआ। गांव वालों ने इंद्रसेन से बैल बेच देने के लिये कहा पर इंद्रसेन ने सोन्या को बेचने से साफ मना कर दिया और कहा कि जब मुझे जरुरत थी तो सोन्या ने मेरा साथ दिया तो अब उसे मेरी जरूरत है। उसका साथ में नहीं छोड़ूँगा, यदि मैं उसे बेच दूँगा तो वह पक्का कत्लखाने में मारा जायेगा। वे सोन्या का अपने बेटे की तरह पूरा ख्याल रखते हैं। इंद्रसेन का पूरा परिवार सोन्या की सेवा करता है। आज इंद्रसेन अपने सोन्या बैल की आंख बन गया। वलूज गांव के आसपास के सैकड़ों गांव में इन्द्रसेन की इस उदारता की चर्चा होती है। आज जिस समय में लोग सगे माँ-बाप की सेवा करने में संकोच करते हैं उस समय में इन्द्रसेन किसी महान व्यक्ति से कम नहीं है।

पदम पुरस्कार पाने वाली जैन महिलायें

भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष कला, साहित्य, शिक्षा, खेलकूद, चिकित्सा, समाज सेवा, विज्ञान, व्यापार, उद्योग आदि में विशेष कार्य करने वाले नागरिकों को विशेष पुरस्कार पदम से सन्मानित किया जाता है। ये तीन श्रेणियों में प्रदान किये जाते हैं - पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री। 1954 में प्रारंभ किये गये ये पुरस्कार प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषित किये जाते हैं और भारत के राष्ट्रपति के द्वारा राष्ट्रपति भवन में प्रदान किये जाते हैं। अब तक जैन समाज की 10 महिलाओं को ये प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया है।

1. इंदुमती चिमनलाल शेठ (1970)- भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और गुजरात सरकार में शिक्षा मंत्री रहीं समाज सेविका श्रीमति इंदुमती सेठ को खादी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये व महिला उत्कर्ष के पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।

2. श्रीमति सरयू दोशी - (1999) - नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट मुंबई की डायरेक्टर एवं प्रसिद्ध कला इतिहासकार श्रीमति सरयू दोशी को भारतीय चित्रकला और जैन कला के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिये पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

3. श्रीमति दर्शना झवेरी (2002) - मणिपुरी नर्तनालय की संस्थापक सदस्या श्रीमति दर्शना झवेरी को इस नृत्य कला को संरक्षित करने और देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने के लिये पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।

4. श्रीमति सुनीता जैन (2004)- आई आई टी दिल्ली में प्रोफेसर रह चुकीं प्रतिष्ठित विदुषी श्रीमति सुनीता जैन को हिन्दी और अंग्रेजी कविता और साहित्य में विशेष योगदान के लिये पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया।

5. श्रीमति देवकी जैन - (2006) - यूनाईटेड नेशन्स सलाहकार समिति की सदस्य रहीं श्रीमति देवकी जैन को सामाजिक न्याय और महिला सशक्तिकरण के लिये पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

6. श्रीमति इन्दु जैन - (2016) - भारत के प्रतिष्ठित मीडिया समूह टाईम्स ग्रुप की चेयरपर्सन श्रीमति इन्दु जैन को आध्यात्मिक पहल, महिला सशक्तिकरण और जैन साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिये पद्मभूषण प्रदान किया गया।

7. श्रीमति दुर्गा जैन - (2014) - ओम क्रिएशन्स ट्रस्ट की संस्थापक श्रीमति दुर्गा जैन को दिव्यांग लोगों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा मे किये जा रहे विशेष प्रयासों के लिये पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

8. श्रीमति मीनाक्षी जैन - (2020) - भारतीय इतिहास रिसर्च परिषद की सदस्य श्रीमति मीनाक्षी जैन को मंदिरों के विध्वंस, सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका पर किये शोध कार्य के लिये पद्मश्री से सन्मानित किया गया।

9. श्रीमति शांति जैन - (2020) - संगीत प्रभाकर की उपाधि प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार और बिहार में लोक साहित्य की रानी के नाम से प्रसिद्ध श्रीमति शांति जैन को लोक साहित्य में विशेष योगदान के लिये पद्मश्री से सन्मानित किया गया। श्रीमति शांति जैन संस्कृत और हिन्दी में एम.ए. के साथ पीएचडी और डीलिट की उपाधि प्राप्त हैं।

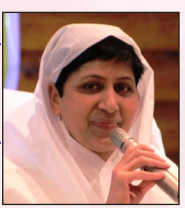

10. आचार्य चंदना - (2022)- भगवान महावीर की प्रथम देशना स्थली राजगृही में वीरायतन की संस्थापक आचार्य चंदनाजी को स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामाजिक सेवा के मानवीय कार्यों के लिये पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया।

अब नहीं लाऊँगी

दोपहर का 1 बजने वाला था जब आनंदजी परिवार सहित शादी से वापिस लौटे। आते ही सब थकान के कारण अपने - अपने कमरे में सोने चले गये। थोड़ी देर बाद जब आनंदजी ने दवा खाने के लिये पानी का जग उठाया तो देखा कि जग में पानी की एक बूंद भी नहीं थी तो वे किचन में चले गये। किचन में देखा तो 10-12 बिसलरी के पानी की बोतलें पड़ी थीं जो कि वे शादी में देखकर आये थे। उन्होंने टंकी से पानी छाना और दवा खाकर सोने चले गये।

शाम को भोजन के समय उन्होंने अपनी बहू से पूछा कि बहू ! ये पानी की इतनी सारी बोतलें कहाँ से आईं। तो बहू ने हंसते हुये कहा कि पापा ! आज सुबह शादी में गये थे न, बस वहीं से ले आई। मैं तो हमेशा ऐसे ही करती हूँ जब भी कहीं शादी या पार्टी में जाती हूँ। दो-चार बोतलें पर्स में रखकर ले ही आतीं हूँ। क्या फर्क पड़ता है, छोटीसी बात है।

थोड़ी देर रुककर आनंदजी गंभीरता से बोले कि बात छोटी है मगर बहुत बड़ी है। एक आदमी दो - चार बोतलें साथ में ले जाये, यह गिनती इतनी ही नहीं है क्योंकि वहाँ भी दो-चार बोतल पानी पी भी ले लेता है। इस तरह एक आदमी लगभग 8 बोतल का प्रयोग करता है। कभी आधा पानी पीकर, कभी एक-दो घूंट पानी पीकर बोतल को कचरे में फेंक देता है। इस तरह प्लास्टिक का कचरा इकट्ठा हो जाता है। यह अच्छा नहीं है।

पापा! आप भी इतनीसी बात का कितना टेन्शन ले रहे हैं। इतना तो चलता है। बहू ने लापरवाही से कहा।

बहू! बात टेन्शन की ही है। कहने वाला कह सकता है कि एक -दो बोतल से क्या फर्क पड़ता है पर गंभीरता से सोचो को विश्व पर आने वाले भयंकर संकट के लिये हम भी जिम्मेदार होंगे।

कौनसा संकट और कैसे जिम्मेदार हैं ?

धरती पर धीरे-धीरे पीने पानी समाप्ति की ओर है। प्लास्टिक के बढ़ते प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। आनंदजी शांति से बोले।

पापा! इसमें हम अकेले क्या कर सकते हैं ?

हर व्यक्ति ऐसा कहेगा तो समस्या का हल कैसे निकलेगा ? यदि हम संकट का समाधान नहीं खोज सकते तो कम से कम समस्या को बढ़ाने से तो बचें।

यदि देश और विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य समझेगा तो समस्या पैदा ही नहीं होगी।

बात तो आपकी सही है पापा।

हाँ बहू! हम हर समस्या के समाधान के लिये सरकार के भरोसे नहीं रह सकते। हमें भी अपना कर्तव्य निभाना चाहिये।

थैंक्यू पापा। अब नहीं लाऊँगी। आज से पानी लाना बंद।

और एक और बात। बिसलरी का पानी अनछना होता है तो प्रयास करना कि छना पानी ही प्रयोग करो।

ओके पापा।

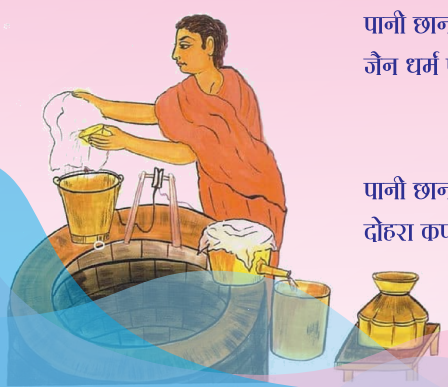

पानी छान के पीना भैया पानी छान के पीना।
जैन धर्म पहचान है भैया पानी छान के पीना।
अरिहंत प्रभु ने बतलाया है जीवन कैसे जीना।
बिना छने पानी में होते जीव अनंतों बचना।
पानी छान के पीना भैया पानी छान के पीना।
दोहरा कपड़ा लेना भैया, विधिपूर्वक छानना।
जीवों की रक्षा करना और निज आतम को ध्याना।
पानी छान के पीना भैया, पानीछाकेपीना।।

क्या प्यार करना अपराध???

घर में आज भीड़ लगी हुई थी। पूरे परिवार के सदस्य बहुत चिंता में लग रहे थे क्योंकि विजेता ने अन्य समाज के लड़के से विवाह करने की बात कही थी। विजेता बीच में चुपचाप बैठी थी। कोने में बैठकर विजेता की मां जोर - जोर से रो रही थी। पिता भी गुमसुम से थे। दादा और दादी तो कमरे के अंदर बंद होकर बैठे थे। उन्हें कई बार बुलाने का प्रयास किया परंतु वह बाहर नहीं आए। एक अजीब सा सन्नाटा घर में लग रहा था। इस मौन को तोड़ते हुए चाचा ने विजेता से कहा कि विजेता! तुम्हें शादी करना ही थी ही है तो परिवार की सहमति से करना चाहिए। क्या तुम्हें परिवार की इज्जत का कुछ ख्याल नहीं है ?

विजेता ने सिर झुकाए हुए कहा - चाचाजी! परिवार की इज्जत की बात तो ठीक है परंतु मेरा कोई व्यक्तिगत जीवन है या नहीं ? यदि मैंने पल्लव से प्यार किया तो क्या मैं अपराध किया ? क्या प्यार करना अपराध है ?

चाचा ने शांतिपूर्वक कहा - नहीं बेटा! प्यार करना कोई अपराध नहीं है लेकिन इससे भी बड़ा अपराध है अपने माता-पिता की इज्जत दांव पर लगाना।

पर मैं किसी की इज्जत दांव पर नहीं लगाई । (विजेता ने बात काटते हुए कहा) मैं तो बस अपनी बात कह रही हूँ। सच है बेटा! आज तुम्हें विप्लव के आगे माता-पिता कुछ नजर नहीं आ रहे। जिन माता-पिता ने अपना पूरा जीवन तुम्हारी खुशियों के लिए अर्पित कर दिया, तुम्हारी मां बचपन से लेकर आज तक तुम्हारे लिए समर्पित रही। हर दिन मां के लिए एक चुनौती भरा होता था। जब तुम घर से बाहर निकलती थी तो जब तक तुम घर में ना आ जाओ तब तक मां को चिंता रहती थी। इन 25 सालों में तुम कहां गई वह कब लौटी ? एक दिन भी मां यह पूछना नहीं भूली। तुम पढ़ाई करने बेंगलुरु गई तब भी हर दिन रात को जब तक तुमसे बात नहीं हो पाती थी तब तक माँ को नींद नहीं आती थी और आज तुम कह रही हो मैंने कुछ नहीं किया। क्या माता-पिता परिवार की मान मर्यादा को तार - तार करना अपराध नहीं है। हो सकता है इस अपराध के लिए देश का कानून तुम्हें कोई दंड नहीं दे परंतु तुम परिवार के लिए तो अपराधी ही हो।

लेकिन चाचा जी मेरी भी कुछ इच्छाएं हैं . . . - विजेता ने धीरे से कहा ।

हां सच बात है। अपनी इच्छाओं को पूरा करने का तुम्हें पूरा अधिकार है परंतु जब अपनी इच्छा पूरी करने के कारण परिवार की सम्मान - प्रतिष्ठा और अपने अमूल्य जन्म का गला

घोंट दिया जाए ऐसी इच्छा किस काम की ? तुम जैन कुल में जन्मी बेटी हो। तुम्हें बचपन से ही जैन कुल के संस्कार दिए। यह जैन कुल बहुत दुर्लभता से मिलता है और महाभाग्य से ऐसा परिवार। क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे पिता और परिवार अपना पूरा जीवन शर्मिंदगी में गुजार दें ? चाचा ने समझते हुए कहा।

मैंने ऐसा कब कहा चाचाजी लेकिन तुम काम तो ऐसा ही कर रही हो ना। हो सकता है कि तुम्हें अपने 2 - 4 महीने के नकली प्यार के सामने अपनी मां का 24 वर्ष का प्रेम छोटा लग रहा हो लेकिन यह बात अच्छी तरह समझ लेना कि मां-बाप के निश्छल प्रेम के सामने तुम्हारा 2 - 4 महीने का प्रेम कुछ भी नहीं है। हम तुम्हारे तुमसे कोई जबरदस्ती नहीं कर रहे हैं निर्णय तुम्हारा है। तुम्हें अपना जीवन सिर्फ पल्लव के साथ अकेले व्यतीत करना है या परिवार के साथ।

चाचाजी! आप कैसी बातें कर रहे हैं . . . परिवार के बिना कोई जीवन होता है क्या ? मैं आप लोगों का साथ नहीं छोड़ना चाहती और ना ही है जैन धर्म ।

तो तुम ऐसा रास्ता ही क्यों चुन रही हो जिसमें जैन धर्म ना मिले।

चाचाजी! ऐसी बात नहीं है पल्लव ने जैन धर्म स्वीकार करने के लिए मन बना लिया है।

ऐसे मन से कुछ नहीं होता बेटा। ऐसी राह क्यों चलना जहां पर शंकाएं ज्यादा हो और विश्वास कम और तुम्हारे जीवन में तुम्हें जिनधर्म की अनुकूलता मिले और परिवार बढ़िया मिले - इसकी जिम्मेदारी के लिए हम सब हैं ना और अपनी बुआ को ही देख लो उन्हें उनके अनुकूल जीवन साथी नहीं मिला तो उन्होंने विवाह नहीं करने का निर्णय किया परंतु गलत मार्ग को नहीं चुना। उन्हें मालूम है एक भव की अनुकूलता के लिए अनंत भव को दांव पर नहीं लगाया जा सकता। जीवन साथी 30 - 40 वर्षों के लिए हो सकता है परंतु जिन शासन अनंतभव के दुखों को दूर कर सकता है। यह तुम्हें निर्णय करना है कि एक भव की लौकिक अनुकूलता जरूरी है या अनंत काल का सुख। निर्णय तुम्हारा है। नहीं चाचाजी! मुझे जैन धर्म और परिवार चाहिए।

वाह बेटा! मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा कोई काम नहीं करोगी जिससे जिनशासन और अपना परिवार कलंकित हो। हम तो सीता, अनंतमति, मैना सुंदरी, नीली जैसी महासतियों के जैन कुल में आये हैं।

हां चाचाजी! मैंने बस अपनी बात रखी है। बस पल्लव मुझे अच्छा लगता है तो मैंने यह बात कही। कोई निर्णय नहीं सुनाया। आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगी।यह सुनकर सबके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

अचौर्यव्रती

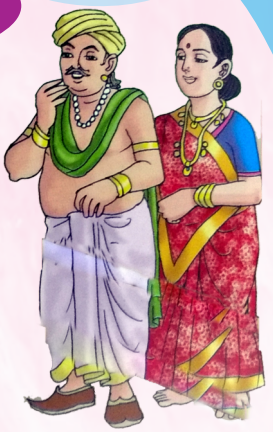

ज्ञान प्रचार के क्षेत्र में आने से पूर्व गुरु गोपालदास जी बरैया एक रायबहादुर सेठ के यहाँ 20/- रुपया मासिक पर काम करते थे। एक बार सेठ साहब आपको तीर्थ यात्रा में अपने साथ ले गये। बरैया जो शास्त्र सभा और व्याख्यान में होशियार थे किन्तु मुनीमी की कला में कोरे थे। यात्रा में रेलवे टिकटों को कतरब्यांत करना, लगेज भाड़ा बचाना, चुंगीवालों को अंगूठा दिखाना, कुली, तांगावालों को बातों में राजी करना, थर्ड क्लास को भी बिस्तर बिछाकर सेकेण्ड बना लेना आदि कलाओं में आप बिल्कुल शून्य थे।

बरैयाजी को होशियार और चतुर समझकर टिकिट लाने का काम दिया गया। बरैयाजी टिकटों में कतरब्योंत तो क्या करते, उल्टे रत्ती-रत्ती सामान तुलवाकर उसका लगेज भाड़ा दे आये। जब सेठ साहब को ये पता चला तो सेठजी ने कहा - "बरैयाजी आपको मालूम हो कि मैं एक रायबहादुर सेठ हूँ। मेरा इतना अपमान कोई नहीं कर सका, जितना आपने मेरा अपमान किया है। संसार में किसी की शक्ति नहीं थी कि मेरा सामान तुला सके किन्तु आपने मेरा रत्ती-रत्ती सामान तुलवाकर मेरी नाक नीची करा दी। आपने एक दो रुपया कुलियों को दिये होते तो सारा सामान गाड़ी पर चढ़ जाता और किसी को पता भी नहीं चलता। मुझे आपसे ऐसी आशा नहीं थी कि आप मेरे मुनीम होकर मेरी ही नाक काटेंगे।"

बरैया जी ने उत्तर दिया - "सेठ साहिब! मैंने कोई बुरा काम तो नहीं किया है। न्यायपूर्वक आपको जितना भाड़ा देना चाहिये, उतना ही चुकाया है। हां यह बात जरूर है कि चाहे मेरे प्राण भी चले जायें किन्तु मैं एक पाई की भी चोरी नहीं कर सकता। यदि हम शिक्षित लोग भी दूसरों की नजर में दूध के धुले बने रहे और इस तरह की

झूठ-चोरी-जालसाजी से अपनी आत्मा को पतित करते रहें तो हममें और उन चोर-डाकुओं में क्या अन्तर रहेगा?" "सेठ जी ने कहा - बरैया जी! मैंने बहुत सी दुनियाँ देखी है, आप जैसे ईमानदार सडक़ों की धूल फांकते हैं और भूखों मरते हैं। आप मुझे क्या पढ़ाते हो? मैं अच्छों-अच्छों को पढ़ाता हूँ। आपका व्यवहार मेरे हक में अच्छा नहीं हुआ। आप जानते हैं, इसका परिणाम क्या हो सकता है?" "सेठ साहिब! अच्छी तरह जानता हूँ और वह यह कि मैं ऐसे स्थान पर क्षण मात्र भी काम करने को तैयार नहीं हूँ, जहाँ धर्म-अधर्म का कुछ भी विवेक नहीं किया जाता है। मैं इसी क्षण से आपके यहाँ से हमेशा को विदा ले रहा हूँ।" इस तरह आप-अचौर्यव्रत की रक्षा के लिये आजीविका को छोडक़र अपने घर पर चले गये।

सार - चोरी किसी भी रुप में हो, वह चोरी ही है तथा वह सभी के लिये एक समान ही है । न करने योग्य बुरा कार्य पाप ही है । उपरोक्त प्रसंग से यह शिक्षा भी मिलती है कि ईमानदारी और सत्यता का जीवन में दृढ़ता से पालन करना चाहिये ।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि "चहकती चेतना" के नाम से **"चहकती चेतना"** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं ।

संपर्क - 9300642434

कोका कोला और पेप्सी जैसे ठंडे पेय स्वास्थ्य के दुश्मन

जैसा देश - वैसा प्रोडक्ट .... मल्टीनेशनल कंपनियों के लिये यह फायदे का फार्मूला है। चहकती चेतना पत्रिका में समय - समय पर कोल्ड ड्रिंक्स के नुकसान के लेख आते रहे हैं। ताजा मामला कोका-कोला कंपनी के ब्रांड फैण्टा को लेकर सामने आया है। पहला अंतर है कीमत का। मलेशिया में फैण्टा की कीमत 140 रु. है और भारत में उसी मात्रा का फैण्टा 40 रु. है। दूसरा बड़ा अंतर है पोषण सम्बन्धी मात्रा का । मलेशिया में प्रति 100 मिलीग्राम फैण्टा में 4.6 शुगर और 3 मिलीग्राम सोडियम होता है। वहीं भारत में बिकने वाली फैण्टा में प्रति 100 मिलीग्राम में 13.6 ग्राम शुगर यानि तीन गुना ज्यादा और 22.3 मिलीग्राम सोडियम यानि सात गुना ज्यादा होता है। इस बारे में कोका कोला कंपनी से जब जबाब पूछा गया तो उन्होंने कोई उत्तर नही दिया।

भारत में फूड सेफ्टी एंड स्टेंडर्ड अथॉरिटी ऑफ के अनुसार कोल्ड ड्रिंक्स में शुगर और सोडियम की मात्रा सीमित होना चाहिये लेकिन भारत में ढीले कानून और सख्ती से पालन न होने के कारण कंपनियां मनमानी करतीं रहतीं हैं।

2017 में भी भारत में बिकने वाले लगभग सभी कोल्ड ड्रिंक्स की जांच की गई तो सभी में शुगर की मात्रा तय मात्रा से काफी अधिक पाई गई परन्तु इस कोई कार्यवाही नहीं हुई।

दूसरे देशों में तय मात्रा से अधिक शुगर और सोडियम पाये जाने पर उस पर पेनल्टी लगाई जाती है और चेतावनी दी जाती है।

ेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के अनुसार 15 वर्ष से 25 वर्ष आयु वालों में कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन 40 प्रतिशत बढ़ गया है जिसके कारण 20 प्रतिशत मोटापे का शिकार हो गये हैं।

झर्नल ऑफ हेपेटोलॉजी के अनुसार कोल्ड ड्रिंक्स में मौजूद हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप से फैटी लिवर रोगी 30-40 प्रतिशत बढ़ गये हैं। इंडियन डेंटल एसोसिएशन का शोध कहता है कि बाजार के इन कोल्ड ड्रिंक्स पीने से बच्चों में दांतों की सड़न 50 प्रतिशत अधिक होती है।

वैसे भी ये सभी कोल्ड ड्रिंक्स बिना छने पानी के हैं जो कि बिल्कुल अभक्ष्य हैं। जिनधर्म के आधार प्रथम नियम पानी छानकर पीने के बिल्कुल विरुद्ध है। इसलिये स्वास्थ्य और धर्म की दृष्टि से कोल्ड ड्रिंक्स पीने योग्य नहीं हैं

बर्फ के गोले... न बाबा न...!

जैसे जैसे गर्मी बढ़ती है बाजार में बर्फ के गोले, लस्सी, आईस्क्रीम, जलजीरा, रसना,शरबत, जूस,गन्ने का रस, मेंगो शेक की दुकानें बढ़ जातीं हैं। चौपाटी अथवा गलियो में बर्फ की दुकानें सज जातीं हैं। बढ़ती गर्मी में बच्चे हों या बड़े - इन ठंडी-ठंडी आईसक्रीम और रंगों से सजे बर्फ के गोले देखकर सभी का मन खाने के लिये ललचाता है। गर्मी के समय में होने वाली शादियो में बर्फ का बहुत उपयोग किया जाता है। बच्चों को बर्फ के गोले बहुत पसंद आते हैं लेकिन इन ठंडी बर्फ की आईसक्रीम और बर्फ के गोलों की कड़वी सच्चाई को बहुत कम लोग जानते हैं। इसी समय डॉक्टर के यहाँ बीमार होने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ जाती है। इन बीमार व्यक्यिों में डायरिया,टाइफाइट, पीलिया, गेस्ट्रा इनट्राइटिस की संख्या अधिक होती है।

सच बात तो यह कि देश में विशेष रूप से खाने वाली बर्फ बहुत कम शहरो में बनाई जाती है। एक सर्वे के अनुसार पूरे देश में जितनी बर्फ बनाने की फैक्ट्रियाँ हैं उनमें से 95 प्रतिशत फैक्ट्रियों का बर्फ खाने योग्य नहीं है। अधिकांश फैक्ट्रियों में गंदे पानी का प्रयोग करके बर्फ बनाया जाता है। यहाँ बनने वाले बर्फ का प्रयोग फैक्ट्रियों और अस्पतालो में किया जाता है। कई अस्पतालों में लाश को बदबू और सड़न से बचाने के लिये भी इस बर्फ का प्रयोग किया जाता है।

वैसे भी बाजार में बिना छने पानी से बनने वाली आईसक्रीम और बर्फ अभक्ष्य होने से खाने योग्य हैं ही नहीं। ये पानी न छना होता है, न फिल्टर का होता है और न दूध वाली आइसक्रीम में दूध का प्रयोग किया जाता है। दूध की जगह मिल्क पाउडर और आरारोट का प्रयोग किया जाता है। यदि आप बीमार होने से और पाप से बचना चाहते हैं तो इन बर्फ के गोलों और सड़क पर बिकने वाली आईसक्रीम से बचें। आईसक्रीम और बर्फ की फैक्ट्रियों की गंदगी देखकर आपको खाने का मन ही नहीं करेगा। फूड स्पेशलिस्ट डॉ. अजय तिवारी ने बताया कि सनस्ट्रोक के साथ इन आइसक्रीम और बर्फ को खाकर रोज हजारों लोग बीमार होते हैं।

आईसक्रीम, श्रीखंड और बर्फ के गोले आदि में मिठास के लिये शक्कर के स्थान पर सेक्रीन का प्रयोग किया जाता है। सेक्रीन के अधिक उपयोग से बीमारियाँ होने की प्रबल आशंका है।

अब यह आप निर्भर है कि आप शुद्ध आईसक्रीम खाना चाहते हैं या अशुद्ध आईस्क्रीम और बर्फ के गोले खाकर बीमार होना चाहते हैं और पाप करना चाहते हैं.....।

कुछ हट के -

ऐसे भी लोग हैं

दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जिनके हृदय भण्डार होता है। पशु-पक्षियों के प्रति उनका वात्सल्य जबरदस्त होता है। ऐसी ही कहानी है पुणे मे रहने वाली स्मिता पासलकर का। उनकी बालकनी में प्रतिदिन तोता, चिड़िया, सनबर्ड, वीवर जैसे सैकड़ों पक्षी दाना चुगने आते हैं। श्रीमति स्मिताजी ने अपनी बालकनी में बर्ड फीडर्स और कई पौधे लगाये हैं इससे पक्षी आकर्षित होते हैं।

स्मिता ने बचपन से ही अपने पिता को पक्षियों को दाना डालते देखा और उन्हीं से प्रेरणा मिली। छः साल पहले जब स्मिता इस अपार्टमेन्ट में रहने आईं तो उन्हें वहाँ ज्यादा पक्षी दिखाई नहीं देते थे लेकिन जब उन्होंने अपनी बालकनी में दाना-पानी रखना शुरु किया तो कुछ पक्षी आने लगे। धीरे-धीरे यहाँ 8 तरह के सैकड़ों पक्षी आने लगे। स्मिता इन्हें चावल, सूरजमुखी के बीज, मूंगफली आदि खिलातीं हैं। वे हर माह लगभग 50 किलो चावल पक्षियों को खिलातीं हैं। स्मिता के इस प्रयास को देखकर सोसायटी के लोगों को भी आश्चर्य होता है और उन्होंने भी अपनी बालकनी में पक्षियों को दाना रखना शुरु कर दिया है। स्मिता इन पक्षियो के वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर करतीं रहतीं हैं ।इन वीडियो को देखकर अनेक लोगों ने अपने घर के पिंजरे में बंद तोता आदि पक्षियों को आजाद कर दिया। स्मिता का यह शौक लोगों के लिये प्रेरणा बन गया है।

दिल्ली में संपन्न हुआ गुरुवाणी मंथन शिविर और 14 वाँ दीक्षांत समारोह

दिल्ली के घेवरा मोड़ में स्थित आत्म साधना केंद्र में 19वाँ आध्यात्मिक गुरुवाणी मंथन शिविर तथा आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का 14 वाँ दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। दिनांक 19 से 23 मार्च आयोजित इस कार्यक्रम में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के सीडी व्याख्यान के साथ पंडित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पंडित देवेंद्र जी बिजौलिया, पंडित श्री अनिल जी भिंड के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन रात्रिकालीन बेला में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की बालिकाओं द्वारा आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। संपूर्ण कार्यक्रम में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रजनीश जी, कोषाध्यक्ष श्री नरेश जी लुहाड़िया, श्रीमती कुसुमजी एवं विदुषी राजकुमारीजी उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में पंडित श्री अशोक जी उज्जैन एवं पंडित श्री अनिकेत जी भिंड के सहयोग से पांच लघु विधानों का आयोजन हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन व पंडित भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा सह निर्देशन में संपन्न हुआ

गौरवशाली महापुरुष

भारत में रेल्वे लाने वाला जैन

भारत के विकास में अन्य व्यक्तियों के साथ जैन समाज के व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, शेयर मार्केट स्थापित करने में, भारत के संविधान को लिखने में जैसे महत्वपूर्ण कार्य में जैनों का योगदान सर्वविदित है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश का नाम भारत जैन सम्राट भरत के नाम पर हुआ और भारत का पहचान चिन्ह अशोक चिन्ह भी जैन धर्म के सिद्धांतों को परिभाषित करता है।

अब बात करें भारत में रेल्वे को कौन लाया तो आपका तुरंत उत्तर देंगे कि अंग्रेज ही भारत में ट्रेन लाये होंगे परन्तु ऐसा नहीं है। 15 सितम्बर1830 को दुनिया की पहली इंटरसिटी ट्रेन इंग्लैण्ड में लिवरपूल और मैनचेस्टर शहरों के बीच चली। यह समाचार सभी जगह फैल गया। बम्बई के एक व्यक्ति को जब यह मालूम चला तो उसे लगा कि यह ट्रेन मेरे गांव में चलना चाहिये। उस समय भारत की परिस्थिति के अनुसार कोई यह सुनता तो इसे मजाक ही समझता परन्तु यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि श्री नाना शंकर सेठ थे जिनका मूल नाम जगन्नाथ शंकर मुर्कुटे था। यह मुम्बई से 100 किमी दूर मुरवाड़ के निवासी थे और बहुत धनवान थे। इनके पिता ने इनके लिये एक विशेष अध्यापक रखकर इन्हें अंग्रेजी सिखाई थी। उस समय किसी भारतीय द्वारा अंग्रेजी सीखना आश्चर्य ही माना जाता था। पिता की मृत्यु के बाद इन्होंने अपने पिता के व्यापार का बहुत विस्तार किया। सेठ जगन्नाथ का उस समय का प्रभाव इस तरह समझा जा सकता है कि जब विश्व के अनेक देश ब्रिटिश सत्ता और उनके अफसरो के सामने बोलने की हिम्मत नहीं कर पाते थे उस समय बड़े अंग्रेज अधिकारी सेठजी के सामने झुककर नमस्कार

करते थे। कई अंग्रेज सेठजी के अच्छे मित्र बन गये थे। इसलिये जगन्नाथ सेठ ने बंबई में रेलवे प्रारंभ करने का विचार किया।

1843 में वे अपने पिता के मात्र और विख्यात व्यवसायी जमशेदजी जीजीभाय टाटा के पास गये। श्रीनाना के पिता की मृत्यु के बाद श्रीनाना के लिये पिता के समान थे। श्रीनाना ने जेजे टाटा के सामने अपनी भावना रखी और जेजे टाटा ने इंग्लैण्ड से आये सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश सर थॉमस एर्स्किन पेरी से चर्चा की कि क्या मुम्बई में ट्रेन चालू की सकती है। यह सुनकर उन्हें भी आश्चर्य हुआ। बाद में इन तीनों ने मिलकर भारत में इंडियन रेलवे एसोसिएशन की स्थापना की। इस समय ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में रेल्वे बनाने का कोई विचार नहीं था पर जब श्रीनाना शंकर सेठ, सर जेजे, सर पैरी जैसे प्रतिष्ठित लोगों ने कहा तो कपंनी को इस ओर ध्यान देना पड़ा।

13 जुलाई 1844 को कंपनी ने सरकार को एक प्रस्ताव पेश किया। बंबई से कितनी दूरी तक रेल की पटरी बिछाई जा सकती है इसकी रिपोर्ट तैयार करने का आदेश दिया गया। उसके पश्चात् बॉम्बे कमेटी का गठन किया गया। नाना ने कुछ अन्य बड़े अंग्रेज अधिकारियों, व्यापारियों और बैंकरों को एकत्रित किया और ग्रेट इंडियन रेल्वे की स्थापना कर दी जिसे आज भारतीय रेल के नाम से जाना जाता है।

लगभग 9 साल के लगातार के काम के बाद 16 अप्रेल 1853 को दोपहर 3.30 पर ट्रेन बंबई के बोरीबंदर स्टेशन से थाना के लिये चलाई गई। इस ट्रेन में 18 डिब्बे और 3 लोकोमोटिव इंजन थे। इस ट्रेन के यात्रियों में श्री नाना शंकर सेठ, जेजे टाटा भी शामिल थे। सन् 1991 में भारत सरकार द्वारा श्री नाना शंकर सेठ की स्मृति में डाक टिकिट जारी किया गया। देश के विकास के इस महत्वपूर्ण कार्य के शुभारंभ के लिये श्री नाना शंकर सेठ का देश हमेशा ऋणी रहेगा।

24 तीर्थंकर एक ही पेन्टिंग में

संतोषी सदा सुखी

जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् ï **पण्डित सदासुखदासजी** जयपुर में निवास करते थे। जैन दर्शन से सम्बन्धित ग्रन्थ लेखन में उन्हें विशेष अभिरुचि थी। वे जयपुर नरेश सवाई रामसिंह जी के शासन काल में राज्य के कोषाध्यक्ष भी थे।

एक दिन की बात है किसी ईष्यालु व्यक्ति ने राजा के पास यह शिकायत की कि 'पण्डित सदासुखदास ठीक तरह से कार्य नहीं कर रहे हैं, जब देखो तब धार्मिक ग्रन्थ ही पढ़ते रहते हैं, इससे अपने राज्य को लाभ के बजाय हानि होती है और राज्य का सारा हिसाब-किताब अस्त-व्यस्त हो गया है। राजा रामसिंहजी को पण्डितजी की विद्वत्ता पर गर्व था, पर राज्य के कार्य के प्रति उनकी ढिलाई उन्हें जरा भी पसन्द नहीं थी। एक दिन दोपहर के समय बिना कोई पूर्व सूचना दिये वे कोषालय गये। यकायक राजा को देखकर कोषालय के कर्मचारी घबरा गये। सबने उठकर राजा का अभिवादन किया। राजा रामसिंहजी ने तो आते ही पण्डित सदासुखजी के बहीखाते और रजिस्टर देखने प्रारम्भ किये। आदि से अन्त तक सभी बहीखाते राजा ने खोजे परन्तु कहीं भी उन्हें जरा-सी भूल नजर नहीं आई। पण्डित जी का इतना सुन्दर, स्वच्छ एवं व्यवस्थित कार्य देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और बोले- पंडितजी! आपके कार्य से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, आज से आपको पहले से दुगुना वेतन दिया जाएगा।'

राजा की बात सुनकर पण्डितजी घबराते हुए बोले- 'राजन् ! आपकी बात तो ठीक है, पर एक निवेदन है।' 'वह क्या है? हम आपकी बात पर अवश्य विचार करेंगे?' पण्डितजी ने कहा - 'राजन! अब से मैं ग्रन्थ लेखन का कार्य प्रारम्भ करने वाला हूँ, अत: प्रतिदिन दो घण्टे विलम्ब से आ सकूंगा। कृपया मेरे पूर्व के पारिश्रमिक में एक चौथाई की कटौती कर दी जाए।' पण्डितजी का निवेदन सुनकर राजा सहित सभी लोग आश्चर्य

में डूब गये। उन्होंने अपने जीवन में पहली बार ही ऐसा विचित्र निवेदन सुना था। भला ऐसा कौन प्रामाणिक व्यक्ति है जो अपने पारिश्रमिक में यों कटौती करने का निवेदन करे।

महाराजा रामसिंहजी ने गद्गद हो कहा- 'पंडितजी! आपका कहना ठीक है। कागज लाओ, मैं आपको आदेश लिख देता हूँ।' महाराजा ने कागज पर लिखा 'पण्डितजी को वर्तमान पारिश्रमिक से दुगुना पारिश्रमिक दिया जाय। साथ ही इन्हें इच्छानुसार कार्यालय में आने की हिदायत दी जाय।'

आदेश पढक़र पण्डितजी अभिभूत हो गए। तब से वे एकाग्रता पूर्वक अपने ग्रन्थ-लेखन कार्य में लग गए। उन्होंने कई ग्रन्थों पर टीकाएं लिखीं एवं अन्य भी मौलिक साहित्य का सर्जन किया।

सार - निश्चय ही प्रामाणिक व्यक्ति हर कहीं विश्वास पात्र और प्रशंसनीय बन जाता है तथा प्रामाणिकता का आदर्श उसे जीवन की विशिष्ट ऊंचाईयों तक पहुंचा देता है।

जिनदेव ही एक शरण है

शेष भाग-पेज नं.26

फुफकारते हुए राजा की तरफ बढने लगे। यह दृश्य देखकर राजा ने कहा - हे सर्पराज! तुमको मुझे डसना हो तो डस सकते हो, सबको भयभीत क्यों कर रहे हो?

सभी लोगों ने राजा को समझाया कि आप नागदेव को नमस्कार कर लीजिए, अन्यथा सम्पूर्ण राज्य का अनिष्ट हो सकता है किन्तु राजा ने किसी की एक भी नहीं सुनी।

उसी समय खबर मिली कि रानी और राजकुमार को भी सर्प ने डस लिया है। यह सुनकर राजा ने कहा - यदि उनकी आयु समाप्त हो चुकी है तो कोई बचा नहीं सकता और आयु शेष है तो कोई शक्ति मार नहीं सकती है। कुछ देर बाद राजा को भी सर्प ने काट लिया किन्तु राजा अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा।

राजा की इस दृढ़ श्रद्धा को देखकर देव ने साक्षात् प्रगट होकर अपनी धृष्टता के लिए राजा से क्षमायाचना की।

जिनदेव ही एक शरण

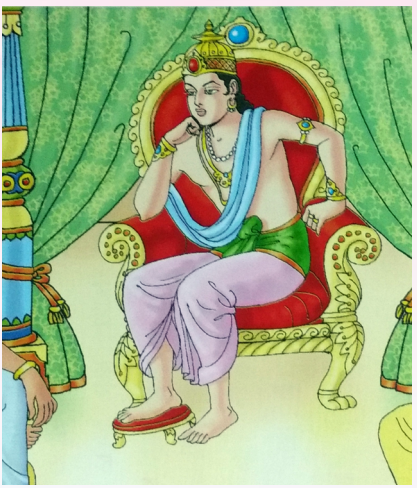

राजा धर्मघोष सच्चे देव-शास्त्र-गुरु और धर्म को छोडक़र किसी भी अन्य देव-देवता या गुरु को नमस्कार नहीं करते थे। क्योंकि लोग शुद्ध सोने के नाम से ही बिकने वाला खोटा सोना कभी भी नहीं खरीदते हैं। अत: धर्म मार्ग में सच्चे और खोटे देव-गुरु-धर्म की पहचान होना ही चाहिये।

किसी देव ने राजा की परीक्षा करने के लिए नगर के बाहर एक नाग मन्दिर की रचना करके उसमें नागदेव की प्रतिभा स्थापित कर दी और नगर में प्रसिद्धि करा दी कि इन नागदेवता की पूजा करने से सब की मनोकामना पूर्ण होती है। नगर निवासियों के झुण्ड के झुण्ड उस नाग मन्दिर में पूजा भक्ति करने को जाने लगे।

मंत्री लोगों ने राजा से भी पूजा भक्ति के लिए चलने का आग्रह किया। राजा ने कहा - मैं वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा को ही नमस्कार करता हूँ। रागी द्वेषी नामधारी देव की पूजा से मिथ्यात्व और राग द्वेष की पुष्टि होती है। क्योंकि पुण्य के उदय के बिना किसी को कुछ दे तो सकते नहीं किन्तु हम जानते हैं कि वे हमारा भला कर देंगे। जबकि उनमें ऐसी शक्ति है ही नहीं। यदि वे भला करने लगे तो दुनिया में कोई दुखी रहेगा ही नहीं। और यदि किसी को मरने से बचा सकते होते तो दुनिया में कोई मरता ही नहीं, सभी अमर हो जाते।

राजा के इस प्रकार कहने के पश्चात् राजसभा में सर्प ही सर्प ऊंचा फन उठाये

शेष भाग-पेज नं.25

हमारे नये प्रकाशन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर और जिनदेशना समिति के द्वारा विगत लगभग 20 वर्षों से बाल युवा वर्ग के लिये साहित्य का प्रकाशन एवं अन्य गतिविधियाँ संचालित होती रहीं हैं। इस श्रृंखला में संस्था द्वारा नवीन प्रकाशन हो रहे हैं -

1. जिनधर्म की कविताओं का संसार - बच्चों के गुनगुनाने के लिये और साथ ही जिनधर्म की अनेक ज्ञानवर्धक बातें सिखाने वालीं प्यारी कविताओं का संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें लगभग 150 सचित्र कविताओं का संकलन होगा। यह संकलन बाल शिविरों में भी बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

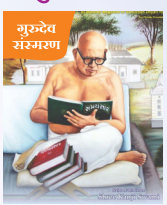

2. गुरूदेव संस्मरण - पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के अध्यात्मिक विचारधारा से समाज परिचित है परन्तु उनका दैनिक जीवन भी सभी आत्मार्थियों के लिये आदर्श है। उनके जीवन की अनेक घटनायें प्रेरणादायक रहीं हैं। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों में आये अनेक संस्मरण और घटनाओं को पुस्तक के रूप दिया जा रहा है। यह संकलन बच्चों और समाज को बहुत प्रेरणादायी होगा और गुरूदेवश्री के जीवन के सम्बन्ध में भ्रांतियों का निराकरण हो सकेगा।

3. जिनदेशना बोध कथायें - भारत देश को महापुरुषों की धरती कहा जाता है। इस देश मे अनेक तीर्थंकरों, मुनिराजों और ज्ञानियों के साथ समाजसेवियों के जीवन की घटनायें हमें जीवन जीने की राह दिखातीं हैं और जीवन की समस्याओं को सामना करने की शिक्षा देतीं हैं। ऐसे ही अनेक प्रेरक -प्रसंगों के संकलन को पुस्तक का रूप प्रदान किया जा रहा है। वर्तमान समय में बच्चों के लिये स्वस्थ पाठ्य सामग्री का अभाव है ऐसे समय में यह संकलन बहुउपयोगी होगा।

4. जिनधर्म के रंग - बचपन में सभी को रंगों से बहुत प्यार होता है। स्कूल में भी एक विषय के रूप में ड्राइंग होता है। इन्हीं रंगों के साथ कुछ शिक्षा देने के उद्देश्य से ड्राइंग बुक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस संस्था के ड्राइंग बुक का तीसरा भाग होगा। यह चौबीस तीर्थंकर भगवंतों के चिन्ह पर आधारित होगा और साथ तीर्थंकर भगवंतों का सामान्य परिचय भी होगा।

इन सभी प्रकाशन में सहयोग आमंत्रित है। आप अपनी प्रकाशन सहयोग राशि निम्न खाते में जमा करके 7000104951 पर सूचित करें।

-विराग शास्त्री, जबलपुर संपादक

समाचार

जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन आगामी 13 मई से

जिनदेशना द्वारा तत्वप्रचार की गतिविधियों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष मध्यप्रदेश के 30 नगरों में एक साथ **जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर** का आयोजन किया जाता रहा है। इसी क्रम में इस वर्ष **आगामी 13 से 18 मई तक** यह शिविर का आयोजित किया जायेगा। यह शिविर श्रेष्ठी श्री बिमलकुमारजैन की चतुर्थ पुण्य स्मृति में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर, इंदौर और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्वावधान में आयोजित होगा। इस वर्ष श्री हिम्मतभाई शाह मुम्बई का भी विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस शिविर का सम्पूर्ण व्यय समाज के सहयोग से जिनदेशना समिति द्वारा किया जाता है।

शिविर के निर्देशक के रूप में विराग शास्त्री, सह निर्देशक श्री आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, संयोजक श्री श्रेयांसजी शास्त्री अभाना श्री अमितजी अरिहंत भोपाल, श्री भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा, श्री अनिकेतजी शास्त्री भिण्ड कार्य कर रहे हैं।

होली पर जिनदेशना खेल महोत्सव संपन्न

होली के अवसर पर रंगों से बचकर जिनधर्म की आराधना में उपयोग लगाने की भावना से प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी जिनदेशना खेल महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 12 मार्च से 14 मार्च तक आयोजित इस महोत्सव के अंतर्गत प्रतिदिन ऑनलाईन माध्यम से रोचक खेल खिलाये गये। इसमें प्रतिदिन लगभग 15 विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कारों की घोषणा की गई। इस कार्यक्रम में श्री राजीव जैन आगरा, श्रीमति नीलू जैन जयपुर, श्रीमति ज्योति अभय बिरधा भोपाल, श्री आशीष छगनलालजी जैन मलाड मुम्बई, श्रीमति रश्मि वीरेश जैन सूरत, श्रीमति सपना सावरिया, विवान विरल मेहता भायंदर मुम्बई, श्रीमति भारती सतीश बेलोकर चिखली आदि महानुभावों ने पुरस्कार सौजन्य के लाभार्थी बनकर सहयोग प्रदान किया। इन खेलों में लगभग 1900 प्रतिभागियों ने सहभागिता की और इस प्रयास के लिये जिनदेशना समिति को धन्यवाद प्रेषित किया।

दिमागी कसरत

हाथी को मुनिराज तक पहुँचाओ

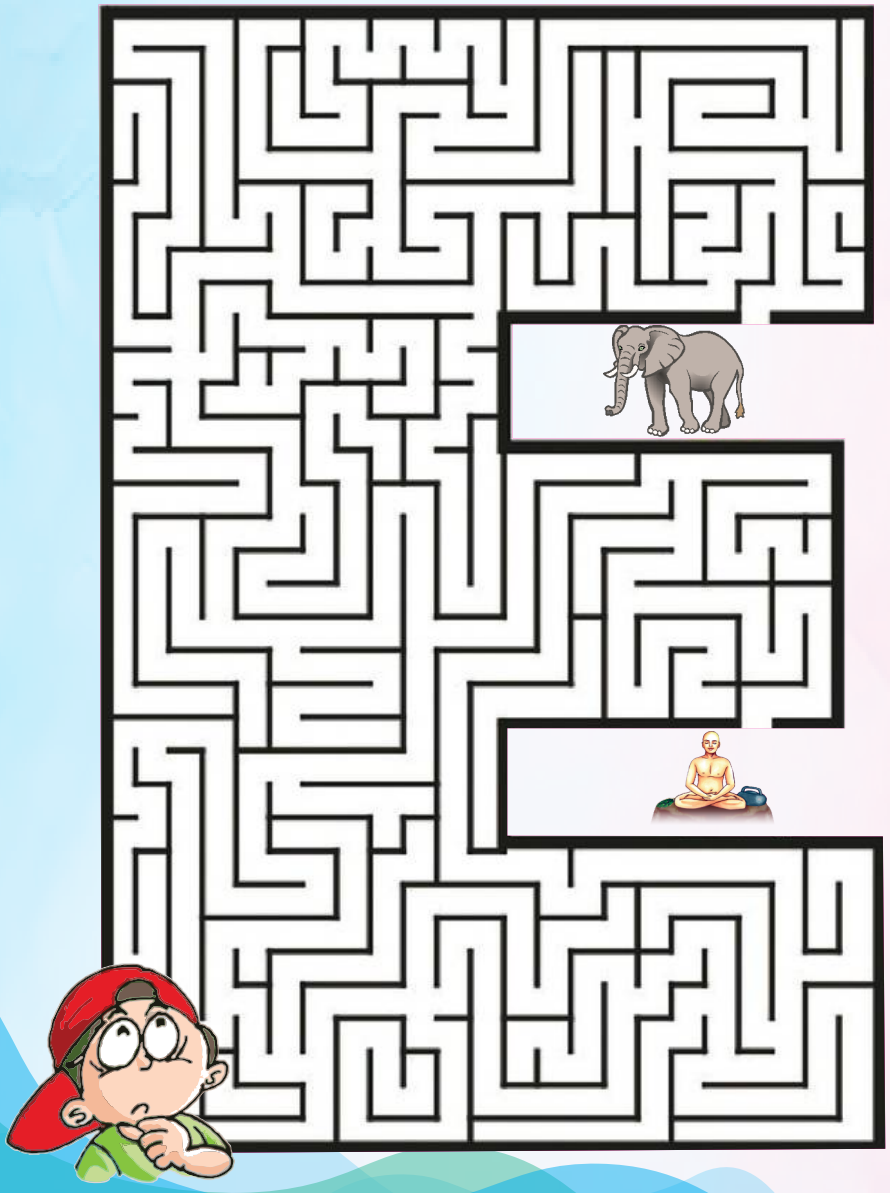

श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

बने चहकती चेतना के

शिरोमणि परम संरक्षक

सम्पूर्ण जैन समाज की एकमात्र बाल त्रैमासिक पत्रिका चहकती चेतना विगत 17 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के नियमित पाठक श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन ने पत्रिका के स्थायी फंड में 1 लाख की राशि देकर परम संरक्षक पद को स्वीकार किया है। शासकीय विद्यालय में उपप्राचार्य रहे श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन जबलपुर के वरिष्ठ विद्वान हैं और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर में वर्षों तक अध्यापक कार्य करने साथ देश के अनेक नगरों में जाकर स्वाध्याय का लाभ प्रदान किया है। जबलपुर में नवनिर्मित धर्मायतन जिनमंदिर में भी आपका विपुल सहयोग प्राप्त हुआ है।

चहकती चेतना परिवार श्री नरेन्द्रकुमारजी का परम संरक्षक पद हार्दिक अभिनंदन करते हुये उनके प्रति आभार ज्ञापित करता है।

सोनगढ़ में प्रवेश शिविर संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई द्वारा संचालित पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ़ 16वां प्रवेश साक्षात्कार शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। दिनांक 27 से 29 मार्च 2025 तक संपन्न प्रवेश प्रक्रिया प्राप्त आवेदनों में से चयनित 45 विद्यार्थियों ने लिया शिविर में भाग लिया। इसमें गहन चयन प्रक्रिया साक्षात्कार, व्यवहार गणित-अंग्रेजी-विज्ञान टेस्ट, धार्मिक परीक्षा, भाषण, टैलेंट व योग्यता के आधार पर बनी मेरिट लिस्ट के आधार पर कक्षा छठवीं में 20 और कक्षा आठवीं में 2 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया।

चयन प्रक्रिया में विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोगसंस्था संचालिका श्रीमती दीपा बेन हितेन शेठ, मुंबई, निदेशक विरागजी शास्त्री (जबलपुर), प्राचार्य चेतन्य शास्त्री, आतम शास्त्री, प्रियम शास्त्री, शुभांशु शास्त्री, पुष्प शास्त्री एवं मोहित शास्त्री का प्राप्त हुआ।

जन्मदिन की मंगल शुभकामनायें

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही
जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

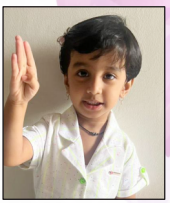

सिया जैनधर्म मिला, आतम हित के काज।
जन्म दिवस पर यही कामना, पाना शिवपुर राज।।

सिया अजिंक्य जैन, पुणे 2 अप्रेल

प्रेक्षा सुन्दर नाम है, करना मंगल काम।
निज में निज की अस्ति हो, बनना तुम भगवान।।

- प्रेक्षा जैन 13 अप्रेल

निश्चल अपना भाव हो, निश्चल हों सब काम।
यही कामना जन्म दिवस, बनो सिद्ध भगवान।।

- निश्चल जैन भीलवाड़ा राज 1 मई

कृति आपका जन्म दिवस, लेना यह संकल्प।
जैन धर्म महिमा बढ़े, छूटे सर्व विकल्प।।

- कृति जितेन्द्र जैन - 10 मई

कुश जैन धर्म का सदा बढ़ाना मान।
सफल रहो हर काम में, बना शीघ्र भगवान।

- कुश संचित बगड़ा, जयपुर 18 मई

प्रथम आपका नाम, प्रथम रहे जिननाम।
उत्तम श्रावक तुम बनो, जग में गूंजे नाम।।

- प्रथम अमरीश जैन 24 जून

बोलते चित्र

कर्म
जिंदगी
फल

जरा पानी दे बेटा! दो घंटे से मांग रही हूं..
रुक मां! मदर्स डे पर मेसेज पोस्ट कर दूं..
मदर्स डे आज
माधव

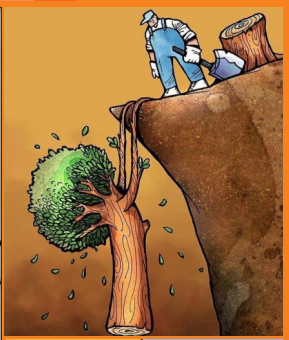

SUCCESS
HARD WORK
PERSISTENCE
LATE NIGHTS
REJECTIONS
SACRIFICES
DISCIPLINE
CRITICISM
DOUBTS
FAILURES
RISKS
What people see
What people don't see.

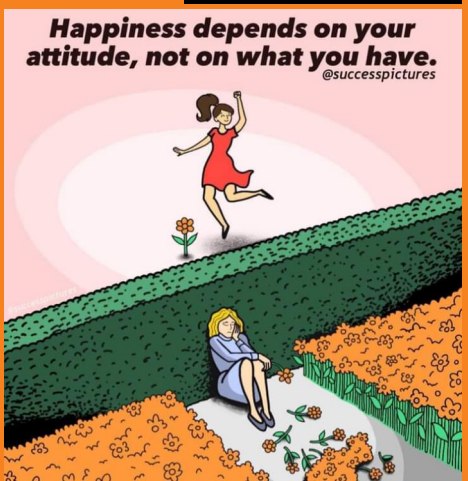
Happiness depends on your attitude, not on what you have.
@successpictures

Ashiyana_Apno_Ka

@successpictures

अपनी-अपनी करनी का फल

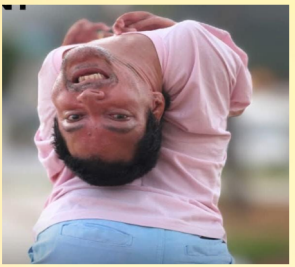

शरीर की विचित्र संरचना जिसमें सिर पीछे की ओर है जो सीधा नहीं होता

किसी के रूप का फल

हे भगवान ये कैसे कर्म का उदय

बंगलादेश के ट्री मेन के नाम से मशहूर यह व्यक्ति जिसके हाथों में पेड़ों की जडे निकलते हैं जो कि बहुत दर्द देती है

उत्तर प्रदेश के रहने वाले राज मात्र 22 इंच के हैं। एक दुर्लभ बीमारी के कारण उनका विकास रुक गया

हाथ इतने बड़े कि जीना मुश्किल

17 वर्ष की 2 जुड़वां बहनें जिनका ऑपरेशन होना भी असंभव है

शरीर ऐसा कि जीना क्या मरना क्या

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपारला, मुम्बई एवं
कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के तत्वावधान में
श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
तीर्थधाम ज्ञानोदय, भोपाल द्वारा
षष्टम
जिन देशना
यूथ
कन्वेन्शन
by young
for young...
तीर्थधाम ज्ञानोदय, भोपाल में आयोजित
25-28
शुक्रवार से सोमवार
जुलाई 2025
युवाओं के लिये अनूठा प्रयोग
पधारिये एक नये अहसास के लिये
LIVE ON
जिन देशना
रजिस्ट्रेशन की लिंक प्राप्त करने के लिए 9752756445 पर what'sapp द्वारा संपक करें
संपर्क : अर्पित शास्त्री -7869875108, मनीष शास्त्री - 8087216959
कार्यक्रम स्थल :
तीर्थधाम ज्ञानोदय
विदिशा-भोपाल रोड,
दीवानगंज, जिला-रायसेन
निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434
संयोजक : अमित अरिहंत, भोपाल 9588001360

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपारला, मुम्बई एवं
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द-कहान आत्मार्थी ट्रस्ट
दिल्ली द्वारा
जैनम् जयतु शासनम्
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द-कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली
श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनमंदिर
महावीर स्वामी जिनमंदिर
युवाओं के लिये अनूठा प्रयोग
पधारिये एक नये अहसास के लिये
पंचम
जिन देशना
यूथ
कन्वेन्शन
by young
for young...
14-17
गुरुवार से रविवार
अगस्त 2025
LIVE ON
जिन देशना
कार्यक्रम स्थल :
अध्यात्म तीर्थ
आत्म साधना केन्द्र
घेवरा मोड, दिल्ली
आयोजक:
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द-कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली
संयोजक : संदीप शास्त्री 9868048645
भूपेन्द्र शास्त्री 9098038900
निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434